ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

मोक्षदायिनी – गंगा

[1]डॉ0 आनन्द गोस्वामी

[1]एसोसिएट प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष–इतिहास, राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, चरखारी (महोबा) उ0प्र0

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 11 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

धार्मिक अवधारणा है कि गंगा में स्नान करने से मनुष्य के सारे पापों का नाश हो जाता है, और वह मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। पौराणिक काल से ही ब्रह्म–द्रव्य के रूप में प्रसिद्ध गंगा नदी के औषधीय गुणों का अध्ययन ''नीरी'' ने किया भी है। गंगा नदी अपनी शुद्धीकरण क्षमता में भी विख्यात है। गंगा में पायी जाने वाली शार्क के कारण भी विश्व के वैज्ञानिकों की इसमें रूचि है। इस मोक्ष दायिनी नदी को WHO ने विश्व की सबसे प्रदूषित नदियों में माना था।

वर्तमान में गंगा की प्रदूषण मुक्ति हेतु अनेकानेक कार्यक्रम यथा–नमामि गंगे आदि चलाये जा रहे है, फलतः शीघ्र ही गंगा अपने निर्मल/स्वच्छ स्वरूप में होगी और इसके घाटों में हर–हर गंगे की स्वर लहरियाँ गूँजेगी।

Key words- राष्ट्रीय नदी, बैक्टीरियोफेज, शार्क, **Coliform** पारा, राष्ट्रीय जल मार्ग, मोक्ष, डालफिन, नमामि गंगे।

Introduction

भारत की सर्वाधिक महत्तवपूर्ण नदी गंगा जो भारत और बांग्लादेश में मिलाकर (2017+439) 2510 कि0मी0 की दूरी तय करती हुयी उत्तराखण्ड में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुन्दरवन तक विशाल भू–भाग को अभिसिंचित करने वाली यह नदी देश की प्राकृतिक सम्पदा ही नहीं वरन जन–जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। भारत की पवित्रतम मानी जानी वाली गंगा नदी की उपासना यहाँ माता और देवी की रूप में की जाती है। ऐसी धार्मिक अवधारणा है कि गंगा में स्नान करने से मनुष्य के सारे पापों का नाश हो जाता है। समस्त संस्कारों में गंगा जल अनिवार्य माना गया है। इसीलिये इसके घाटों पर लोग पूजा–अर्चना करते हैं ध्यान लगाते हैं।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

वस्तुतः इस नदी घाटी में एक ऐसी सभ्यता का उद्‌भव और विकास हुआ जिसका प्राचीन इतिहास अत्यंत गौरवमयी व वैभवशाली है। यहॉ ज्ञान, धर्म , अध्यात्म व सभ्यता–संस्कृति की ऐसी किरणें प्रस्फुटित हुई जिससे न केवल भारत बल्कि समस्त संसार अवलोकित हुआ। भारत की **राष्ट्रीय नदी** गंगा जल ही नहीं, अपितु भारत और हिन्दी साहित्य की मानवीय चेतना को भी प्रवाहित करती है। ऋग्वेद, महाभारत, रामायण एवं अनेक पुराणों में गंगा को पुण्य सलिला, पाप–नाशिनी, मोक्ष–प्रदायनी, सरित्श्रेष्णा एवं महानदी कहा गया है।

गंगा नदी के उत्तर–भारत की अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड भी कहा जाता है। पौराणिक काल से ही **ब्रह्म–द्रव्य** के रूप में विख्यात गंगा नदी के औषधीय गुणों का अध्ययन राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग शोध संस्थान (**नीरी)** ने किया है।

गंगा नदी विश्व भर में अपनी शुद्धीकरण क्षमता के कारण भी जानी जाती है। इस नदी के जल में **बैक्टीरियोफेज** नामक विषाणु होते है जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं।

डालफिन की भी दो प्रजातियाँ गंगा में पायी जाती है, जिन्हें **गंगा डालफिन** और **इरावदी डालफिन** के नाम से जाना जाता है। गंगा में पायी जाने वाली **शार्क** के कारण भी विश्व के वैज्ञानिकों की इसमें रूची है। गंगा जल के स्वरूप एवं इससे जुड़े विभिन्न कारकों एवं विशेषताओं का पता लगाने के लिये **राष्ट्रीय स्वच्छ गंगामिशन** ने 4.96 करोड़ रू0 की अतिरिक्त राशि को मंजूरी दी है।

गंगा प्रदूषण– गंगा की अनुपम शुद्धीकरण क्षमता तथा समाजिक श्रद्धा के बाबजूद इसको प्रदूषित होने से रोका नहीं जा सका है। गंगा के तट पर घने बसे औद्योगिक नगरों के नालों की गंदगी और प्लाास्टिक कचरे की बहुतायत ने गंगा जल को बेहद प्रदूषित किया है।

पवित्रता और धार्मिक आस्था से जुड़ी गंगा इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि सम्पूर्ण भारत के लिये चिन्ता का विषय बन गयी है। विश्व **बैंक रिपोर्ट** के अनुसार उ0प्र0 की 12 प्रतिशत बीमारियों का कारण प्रदूषित गंगा जल है। इस प्रदूषित जल में उपस्थित जीवाणु, फफूँद, परजीवी और विषाणु के कारण गंगा जल पर निर्भर रहने वाले लगभग 40 प्रतिशत भारतीय हैजा, उल्टी, दस्त, बुखार, त्वचा की समस्याएँ जैसी बीमारियों से पीड़ित है। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे विश्व की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक मानते हुए इसका प्रदूषण स्तर निर्धारित मानक से 300 गुना अधिक बताया है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि, हरिद्वार में गंगा जल में Coliform का स्तर 3500 पाया गया, जब

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

कि पीने के पानी हेतु यह स्तर 50 के नीचे, नहाने के पानी में 500 के नीचे होना चाहिये। **पटना वि0 वि0** ने बनारस स्थित गंगा के जल में **पारा** होने की पुष्टि की है।

गंगा प्रदूषण का मुख्य कारण–रासायनिक कचरा है, जो फैक्ट्रियों, कारखानों आदि से गंगा के जल में घुल रहा है। नालों से निकलने वाले मॉल–जल, कल–कारखानों से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थ, कृषि से संबंधित रासायनिक अवशेष, पशुओं के शव, अधजले मानव मानव शरीर छोड़े जाने आदि के कारण गंगा का पानी अत्यन्त दूषित हो रहा है।

प्रदूषण मुक्त करने के उपाय– इसके लिये सतत् प्रयत्न जारी है, गंगा सफाई की अनेक परियोजनाओं के क्रम में नवम्बर 2008 में भारत सरकार द्वारा गंगा को भारत की **राष्ट्रीय नदी** तथा प्रयागराज और हल्दिया के बीच (1600 कि0मी0) गंगा नदी जल मार्ग को **राष्ट्रीय जल मार्ग** घोषित किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गंगा को प्रदूषण मुक्त कराने हेतु विभिन्न योजनाऐं जैसे **नमामि गंगे** आदि लागू की है। नमामि गंगे के तहत 187 परियोजनाओं को लिया गया है, जिसमें से अधिकांश परियोजनऐं पूर्ण हो चुकी है/होने वाली है।

ज्ञातव्य है कि भारत के प्रायः सभी प्रमुख नगर गंगा तट पर और उसके आसपास बसे हुये है, वहाँ से मल–मूत्र और गन्दे पानी की निकासी की कोई सुचारू व्यवस्था न होने से वह बहकर गंगा में गिरता रहता है, इसको सरकार के साथ–साथ स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा जन चेतना विकसित कर रोका जा सकता है। इसी प्रकार जन–जागरूकता पैदाकर गंगा जल में लाशें बहाना बंद किया जा सकता है। कारखानों में ऐसे संयंत्र लगाये जाये जो उस जल का शोधन कर सके या उस पानी को, कचरे को कहीं और भूमि के अन्दर दफन किया जा सकता है। शोधन से प्राप्त मलवा बड़ी उपयोगी खाद का काम दे सकता है। धारा के निकास स्थल के आस–पास से वन–वृक्षों, वनस्पतियों आदि का कटाव प्रतिबंधित कर उनका पुनर्विकास आसानी से किया जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि जन्म से मृत्यु तक हिन्दू अनुष्ठानों में गंगा जल को बहुत सम्मान दिया जाता है। अतः गंगा के साथ जुड़ी भारतीयता का ध्यान रखते हुये उसे **प्रदूषण–मुक्त** कराना अत्यंत आवश्यक है, निः संदेह सरकार के साथ– साथ जन–सहयोग से इसे स्वच्छ बनाया जा सकता है। गंगा के पराभव का अर्थ होगा, हमारी सम्पूर्ण सभ्यता का पराभव। अतः आज आवश्यकता है गंगा के अस्तित्व को बचाये रखने की, स्वच्छ रखने की। इसके लिये सरकार के साथ–साथ जन–समुदाय और स्वयं सेवी संगठनों को भी जाग्रत होना पड़ेगा, तभी समस्त घाटों पर हर–हर गंगे की मधुरम स्वर लहरियाँ अनवरत् गुँजायमान होती रहेगी।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

संदर्भः–

1. मोक्षदायिनी गंगा, जी. के. संतोश
2- **Our National River Ganga, Rashmi Sanghi**
3. गंगा नदी नहीं, प्रकाश परिमल
4. गंगोत्री, उत्तराखण्ड सरकार, 2009
5. भौतिक भूगोल, सविन्द्र सिंह, जुलाई, 2002
6. सम–सामयिक घटना चक्र, जुलाई–अगस्त, 2018
7. रघुवंशः संस्कृत महाकाव्य–कालिदास, साहित्य–अकादमी, 2005
8. **Samanya Adhyayan, Digital Press**
9. **Essays of India-Aryan Mythology, Aiyangar Narayan**
10. **UPSC, IAS Mains: Geography, Kalinjar Pulications**
11. नमामि गंगे परियोजना का जल संसाधन मंत्रालय।